प्रथम अध्याय

अहमदबख्श थानेसरी कृति रामायण एवं आर्य संगीत रामायण : एक परिचय

(क) थानेसरी कृत रामायण का सामान्य परिचय

(i) रामायण का सामान्य परिचय

(ii) रामायण हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता ही धरोहर

(iii) रामायण का रचनाकाल

(iv) अहमदबख्श का परिचय

(ख) आर्य संगीत रामायण का सामान्य परिचय

(i) रामायण का सामान्य परिचय

(ii) रामायण हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर

(iii) रामायण का रचनाकाल

(iv) यशवन्त सिंह का परिचय

प्रथम अध्याय

अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण एवं आर्य संगीत रामायणः एक परिचय

(क) थानेसरी कृत रामायण का सामान्य परिचय

(i) रामायण का सामान्य परिचय :

कवि अहमदबख्श की प्रस्तुत पुस्तक रामायण का धरातल संत तुलसीदास का "रामायण" न होकर महर्षि बाल्मीकि कृत "रामायण" है। कवि अहमदबख्श की रामायण में कई प्रसंग ऐसे हैं जिनसे यह निशानदेही मिलती है कि उन्होंने संत तुलसीदास–कृत "रामचरित मानस" से भी लाभ उठाया है । कवि अहमदबख्श ने अपनी रचना रामायण को महर्षि बाल्मीकि और संत तुलसीदास जी की भांति काण्ड़ों में विभाजित किया है। उसकी रामायण में छः काण्ड है। प्रत्येक काण्ड के आरम्भ में किसी न किसी देवता की स्तुति में भेंट कही गयी है। इस रामायण का सामान्य परिचय इस प्रकार है–

1. **आदि काण्ड**–राजा रोमपद की कथा, दशरथ का पुत्रेष्ठी–यक्ष श्री राम जन्म, श्री राम व लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ बन जाना, ताड़का–वध, अहिल्या की शाप मुक्ति, सीता स्वयम्बर, राम–परशुराम–संवाद, श्रीराम की विवाहोपरान्त अयोध्या में वापसी। इस काण्ड में 331 चम्बोले है।

2. **अयोध्या काण्ड**– श्रीराम के राज्य तिलक की घोषणा, कैकई के घर मांगने पर श्रीराम का बनवास, निषादराज गूह से भेंट, केवट संवाद, श्रीराम का महर्षि भारद्वाज से प्रयाग में मिलन, चित्रकूट पर श्रीराम–विवास, दशरथ का देहावसान, भरत का ननिहाल से लौटना और शोक, श्रीराम को वापस लाने के लिए भरत का चित्रकूट जाना और श्रीराम की पादुकाएं लेकर अयोध्या लौटना, राजकाज सम्भालना, श्रीराम का चित्रकूट छोड़ना, ऋषि अत्रि और अनुसुइया से भेंट । इस काण्ड में 368 चम्बोले है। इस काण्ड मेंकवि अहमदबख्श ने भरत का ननिहाल मुलतान लिखा है जो ठीक नहीं है।

3. **अरण्य काण्ड**–विराध वध, राक्षस वध प्रतिज्ञा, ऋषि अगस्त्य से भेंट, पंचवटी निवास, शूर्पणखा के नाक कान काटना, खरदूषण वध, शूर्पणखा की लंका जाकर रावण से फरियाद, रावण–मारीच संवाद, मारीच का कंचन–गृग बनना, श्रीराम का मृग के पीछे जाना, सीता के कहने से लक्ष्मण का श्रीराम की सहायतार्थ बन में जाना, सीता–हरण, रावण–जटायु युद्ध व शबरी से भेंट। इस काण्ड में 223 चम्बोले हैं।

4. **किष्किन्धा काण्ड**–श्रीराम की हनुमान व सुग्रीव से भेंट और मैत्री, बाली–वध, हनुमान का सीता की खोज में जाना, हनुमान संपत्ति भेंट, हनुमान का सागर लांघना। इस काण्ड में 155 चम्बोले हैं।

5. **सुन्दर काण्ड**–हनुमान का राक्षसी को मारकर लंका प्रवेश, विभीषण से भेंट, अशोकवाटिका में सीता से संवाद, अक्षयकुमार वध, लंका दहन, पुनः सीता से मिलकर श्रीराम के पास आना, श्रीराम का रावण से युद्ध के लिए किष्किन्धा से प्रस्थान, सागर तट पर आना, श्रीराम सागर भेंट, सागर के कहने से सेतु बंधन। इस काण्ड में1 94 चम्बोले हैं।

6. **लंका काण्ड**–अंगद रावण संवाद, विभीषण का श्रीराम की शरण लेना, लक्ष्मण मूर्च्छा, हनुमान द्वारा लाई गई संजीवनी से लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होना, कुम्भकर्ण–वध, मेघनाथ वध सलोचना का सती होना, अहिरावण द्वारा श्रीराम लक्ष्मण का हरण और हनुमान द्वारा अहिरावण की मृत्यु, नरान्तक–दधीबल युद्ध, राम–रावण युद्ध, रावण वध, मरणासन्न रावण का उपदेश, सीता की अग्नि परीक्षा, श्रीराम लक्ष्मण और सीता जी का अयोध्या में वापस लौटना, श्रीराम का राज्याभिषेक। इसकाण्ड में 402 चम्बोले हैं।

समस्त रामायणमें 1673 चम्बोले हैं। प्रायः चम्बोले में आठ पंक्तियां है। रावण की मृत्यु के पश्चात् कवि अहमदबख्श ने केवल दो और चम्बोले लिखकर और यह कहकर कि "अब कहां तलक कथना करूं मैं मूर्खनादान" (चम्बोला–401) रामायण समाप्त कर दी।

(ii) रामायण हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर

हरियाणा प्रदेश साहित्यिक सृजन में अग्रणी रहा है। यहां सरस्वती के पावन व पुनीत तट पर बैठ कर ऋषियों ने वेदों का गायन किया था। महर्षि वेद–व्यास ने महाभारत, पुराणों और श्रीमद्भागवत् की रचना की थी। विश्व की सद्भावनाओं का मौलिक स्थान होने के कारण इसका

आदिनाम सृष्टि नियन्ता ब्रह्मा के नाम पर ब्रह्ममूर्त था "ते देवनिर्मितं देशं ब्रह्मवर्त प्रचक्षते"। जिस समय समस्त विश्व अज्ञानता के अंधकार में डूबा हुआ था उस समय इस प्रदेश में वैदिक साहित्य लिखा जा रहा था। इस देवभूमि के आंचल में आर्य सभ्यता एवं संस्कृति ने ऑख खोली। मनु ने कहा है कि संसार के समस्त मानव अपने कल्याणार्थ इस प्रदेश से नागरिकों के पद्चिह्नों पर चलें:

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं एवं चरित्रं शिक्षेरूपृथव्यां सर्व मानवा।

महाकवि बाणभट्ट, संत गरीबदास, संत निश्चलदास, पं0 माधवप्रसाद मिश्र, ठाकुर फेरू, भाई संतोख सिंह, हजरत बुअलि कलन्दर, बाबू बालमुकनद गुप्त, हाली पानीपती, सलीम पानीपती, आफताब पानीपती, रोशन पानीपती, मीर इनायत अली थानेसरी और तालिब पानीपती हरियाणा के साहित्य आकाश के उज्ज्वल नक्षत्र हैं। सारांश यह है कि हरियाणा में साहित्य–सृजन की लम्बी परम्परा है और इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं।

हरियाणा वीर भूमि है। यह सैनिकों और रण–बॉकरों का प्रदेश है। 1014 ई0 से लेकर 1761 ई0 तक यहां के नागरिकों ने विदेशी आक्रान्ताओं से डटकर लोहा लिया। 1857 ई0 की जन–क्रान्ति का श्रीगणेश इसी प्रदेश के नगर अम्बाला छावनी से हुआ थां 1914 ई0 के प्रथम विश्व युद्ध, 1939 ई0 में द्वितीय विश्व युद्ध एवं भारत–पाक और भारत–चीन युद्धों में यहां के वीर सैनिकों ने अपनी वीरता के झण्ड़े गाड़े हैं। हरियाणा तलवार और कलम का अनूठा और बेजोड़ संगम है। ऐसे अक्खड़ स्वभाव और कठोर परिश्रमी लोगों के मरूस्थल रूपी हृदय से साहित्य कल और संगीत के निर्झर का फूट पड़ना एक चमत्कारपूर्ण आश्चर्य है। हरियाणा वीर–भूमि के साथ–साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी भारत के किसी अन्य प्रदेश से पीछे नहीं है। 1960 ई0 में हरियाणा प्रदेश की स्थापना हुई और उसी समय से साहित्यिक कृतियों की खोजबीन उत्साह से आरम्भ हुई। परिणामस्वरूप उच्चकोटि के कवि अहमदबख्श थानेसरी की रामायण भी उन रत्नों में से एक है।

अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण हरियाणा वासियों का आकर्षण केन्द्र रहा है। हरियाणवी जीवन का प्रत्येक क्षेत्र राम के व्यक्तित्त्व से अनुप्राणित तथा अनुप्रेरित है। यह संचेतना हरियाणा

में अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण के द्वारा अभिव्यक्त होती रही है। यह अभिव्यक्ति इतनी सशक्त है कि उसने राम के स्वरूप को हरियाणवी संस्कृति का प्रोज्ज्वल अंग बना दिया है।

अहमदबख्श की रामायण में राम के व्यक्तित्व और उनकी कथा का परिप्रेक्ष्य इतना सकन और व्यापक है कि उसमें सम्पूर्ण जीवन की गहराई और सूक्ष्मता,विस्तार और सौन्दर्य, संघर्ष और सत्य, यथार्थ और आदर्श, विधि–विश्वास और प्रज्ञा आदि स्थितियों, चित्तवृत्तियों और भावभूमियों की अभिव्यक्ति के लिए विपुल अवकाश है। रामचरित के साथ सुगुम्फित कथा में, अर्भक से वृद्ध तक की समग्र अवस्थाएं, राजा, मंत्री से लेकर साधरण नागरिक तक सभी में वर्तमान वैयक्तिक भिन्नता औार समष्टिगत ऐक्य, बनेचर जातियों, राक्षस आदि के अर्द्धविकसित जीवन की विचित्र झलकियां, पारिवारिक सुख और कलह, राजनीति की धर्मोपदिष्ट न्याय–मान्यताएं और दांव–पेच, सहज मानवीय वृत्तियों से लेकर काम आदि कुष्ठाएं, व्यक्ति का सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों मोर्चों पर छिढ़ा द्वन्द्वात्मक संघर्ष आदि का अंकन अत्यंत गहरे और मनमोहक रंगों में किया गया है। अपनी विविधता, सम्पूर्णता और सांस्कृतिक संचेतना की अभिव्जना के कारण अहमदबख्श कृत रामायण आज भी हरियाणवी जीवन को दिशा में सक्षम है। विशेषकर ऐसी अवस्था में जबकि आधुनिक तंत्र के चक्रव्यूह में फंसे व्यक्ति के जीवन–मूल्य अर्थ–राक्षस के रथ के पहियों के नीचे क्षत–विक्षत हो रहे हों–और मानवता के आकाश में किसी भासमान व्यक्तित्व–सूर्य के स्थान पर धूमकेतु उग आए हों। अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है।

(iii) रामायण का रचनाकाल

अहमदबख्श थानेसरी–कृत रामायण हरियाणवी में प्रकाशित प्रथम रामायण है। इसका रचनाकाल लगभग एक शताब्दी पूर्व थानेसर (कुरूक्षेत्र) के प्रसिद्ध एवं जनप्रिय लोक कवि अहमदबख्श ने की थी। हरियाणा की विशिष्ट लोकनाट्य शैली सांग के शुद्ध रूप चम्बोलों में अनुबन्धित इसका अनेक बार मंचन हो चुका है। 1850 में थानेसर की अन्तिम सिक्ख रानी चन्दकौर की मृत्यु के उपरांत थानेसर पर सीधा अंग्रेजों का शासन हो गया था। सिक्ख रानी चन्द कौर का साहित्य–कला–संस्कृति से कोई विशेष लगाव न होने के कारण कोई साहित्य कार्य इस क्षेत्र में नहीं हो सका। अंग्रेजों का राज्य होने के उपरांत 1870–1895 तक थानेसर राज्य में

साहित्य व कला का विकास होने लगा। उसी समय के मध्य अहमदबख्श ने रामायण, जयमल फत्ता,मूग्गा, चौहान, सोरठ, चन्द्रकिरण, नवलदे और कंसलीला सांगों की रचना की। रामायण उनकी पहली रचना है। यदि उन्होंने 25 की आयु से भी आररम्भ की होगी औार लगभग दो–तीन वर्षों में भी इस रचना को सम्पूर्ण किया होगा तो "रामायण" का रचना काल हम 1877–78 मान सकते हैं। क्योंकि उनका जन्म भी अज्ञात है और रचनाकाल भी। यह केवल शोध पर आधारित एक निष्कर्ष मात्र है।

(iv) अहमदबख्श का परिचय :

अहमदबख्श थानेसरी का जन्मकाल अज्ञात है, तथापि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपनी रामायण की रचना उन्नीसवीं शताब्दी के अंत की ओर की होगी। सन् 1870 से 1895 के मध्य 25 वर्षों तक हरियाणा में अनेक कवियों ने सांगों की रचना की, उन्हीं अनेक सांग कवियों में से अहमदबख्श भी एक है। यदि उन्होंने 20 वर्ष की आयु में भी लिखना आरम्भ किया होगा तो उनका जन्मकाल 1850 के आस–पास माना जा सकता है।

अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण के सम्पादक बालकृष्ण मुज़्तर के अनुसार–'हरियाणा में 1870 से 1875 के मध्य सांग प्रचुर मात्रा में लिखे और अभिनीत किये गये।"[1] श्री बालकृष्ण की उक्त पंक्तियॉं भी इस बात की पुष्टि करती है कि 1870 से 1875 तक सांगों के लेखन का बाहुल्य था और उसी समय के अन्तराल में अहमदबख्श ने रामायण की रचना कीं। अतः 1870 से पूर्व 1850 के आस–पास उनका जन्म निश्चित रूप से माना जा सकता है। कवि अहमदबख्श जाति के कंचन थे। उनके एक मात्र संतान एक लड़की ईदन थी। कंचन गाने बजाने वाली एक जाति है।

अहमदबख्श थानेसरी–"गौरवर्ण मझोले कद का हंसमुख व्यक्ति था। सफेद धोती, सफेद कुर्त्ता, काला जूता और सिर पर जरी की टोपी पहनता था। उसका हिन्दी, उर्दू और ज्योतिष्शास्त्र का ज्ञान अपूर्व था । यह ज्ञात नहीं कि वह किस लिपि में सांग लिखते थे, उसमें सांग के अनुसार भाषा और शैली में परिवर्तन करने की बेजोड़ क्षमता थी। मुसलमान होते हुए भी हिन्दू धर्म–शास्त्रों की गहरी जानकारी और हिन्दू देवी–देवताओं में ऐसी अटूट निष्ठा और श्रद्धा कवि अहमदबख्श की उदारता प्रकट करती है।"[2]

अहमदबख्श के समय थानेसर नगर में सांग करने वालों के दो दल या अखाड़े थे। एक

अखाड़े का नाम भादर का अखाड़ा था। भादरसिंह जाति से बढ़ई था। उसके अखाड़े के सांग पुरानी अनाज मण्डी जो आजकल सब्जी मण्डी कहलाती है, में जमते थे। अहमदबख्श इसी अखाड़े से सम्बन्धित थे। भादर के अखाड़े का विशेष गुण कविता थी। भादर के अखाड़े का नाम नानक का अखाड़ा था। नानक चन्द जाति का वैश्य था। इस अखाड़े के सांग गऊशाला के निकट होते थें नानक अखाड़े का विशेष गुण संगीत, साज, स्वर, ताल और लय थे। नानक के अखाड़े के सांग करने वाले राग खमाण में चम्बोला गाते थे। दोनों अखाड़ों में लाग–डाट की होड़ थी, दोनों अखाड़ों के सांग खेलने का समय एक ही था अर्थात् प्रातः ब्रह्म–मुहूर्त से सांग आरम्भ करते थे और दस ग्यारह बजे दिन को समाप्त करते थे। दोनों अखाड़ों के साथ–साथ नागरिक भी दो दलों में विभाजित थें दोनों अखाड़ों के सांगों का श्रीगणेश होने से पूर्व कलाकार औार साजिन्दे इकट्ठे होकर सरस्वती तट पर बने शारदा मन्दिर में जाकर पूजा करते थे और दूसरे दिन कलाकार सांग की वेषभूषा में, शृंगार किये, गाते–बजाते, सुसज्जित रथों पर सवार, शोभा–यात्रा की भांति स्थाण्वीश्वर महादेव की आराधना हेतु मन्दिर में जाते थे। अगले दिन विधिवत् नौ ग्रहों का पूजन करने के पश्चात् सांग आरम्भ हो जाते थे जो प्रतिदिन पूरे फाल्गुन मास के अंत तक होते थे।

डॉ. पूर्णचन्द शर्मा के मतानुसार ,''थानेश्वर खण्ड के कथित कवियों में सर्वाधिक ख्याति मिली थी श्री अहमदबख्श को। उनकी सांग–शृंखला इस प्रकार है–रामायण, जयमल फत्ता, गूग्गा, चौहान, सोरठ, चन्द्रकिरण, नवलदे और कंसलीला।''[3] अहमदबख्श की प्रतिष्ठा का प्रतिपादन करते हुए श्री देवीशंकर प्रभाकर ने इसकी पुष्टि में लिखा है कि,''उन दिनों थानेश्वर में भादर का अखाड़ा और नानक का अखाड़ा नाम से दो प्रसिद्ध अखाड़े थे। कवि अहमद जो कि एक उच्चकोटि के अभिनेता भी थे। भादर के अखाड़े के खिलाड़ी कहलाते थे। फागुन का महीना आने पर ऐसा लगता मानों सारा थानेसर इन दोनों अखाड़ों में उमड़ आया है, उन दिनों सांग ब्रह्ममूहर्त्त में शुरू किया जाता और दोपहर तक चलता। ब्रज की नौटंकी से इसका रूप बहुत कुछ मिलता है। संभव है कि कवि योगेश्वर बालकराम और अहमद हाथरस और कानपुर की नौटंकी शैलियों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं ।''[4]

अहमदबख्श थानेसरी ने रामायण, जयमल फत्ता, गुगा चौहान, सोरठपद्मनी चन्द्रकिरण,

220248

नवलदे और कृष्ण लीला आदि अनेक सांग लिखे हैं। ये सभी सांग अप्रकाशित है। कइयों की तो पाण्डुलिपियां भी उपलब्ध नहीं है। इनकी रामायण उपर्युक्त सांगों में से एक है।

सांग रामायण कृति अहमदबख्श की अन्तिम कृति है। जिसे लिखने से पहले वह भेंट में मोक्ष की कामना करता है :

एक दन्त दयावन्त गुरू गौरि पुत्र गणेश
तुम्हें रटत मुनीजन गुणी सकल सतनामादेश
गुरू तुम बिन कोई कारण नहीं थपता
सतनामादेश मात शारद जिन कृपा ज्ञान घट में खपता
सतनामादेश तपे सूरज जो पूरब पश्चिम तक तपता
सतनामादेश दास तुलसी मुख बरनी रामायण जपता।[5]

कवि अहमदबख्श बहुमुखी प्रतिभा के मालिक और कलम के धनी थे। उनका ज्योतिष्शास्त्र का ज्ञान, ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति और उनका फलादेश रामायण में कई स्थानों पर प्रदर्शित हुआ है, विशेषतः श्री रामचन्द्र की जन्म कुण्डली में उनका यह गुण उभर कर आया है :

राजन् श्री रामचन्द्र के जन्म का हमसे सुनो बखान
चन्द्र वृहस्पति कर्क के पेड़ लग्न अस्थान
तृतीय घर राहू कन्या का आया
फिर चौथे शनि तुला का है सब सुखदायक कारण छाया
फिर पंचम मंगल मकर का है घर सप्तम् में फेरा पाया
है शुक्र मीन के सहित केतू सूर्य मेष का बतलाया।

मूकताल:

वृष का बुध प्यारे–ग्रह उच्च के कहे सारे
रामचन्द्र से लाल–सुफल हैं जन्म तुम्हारे।[6]

इन ग्रहों का फलादेश बताते हुए लिखा है :

राजन् सुन चन्द्र बृहस्पति कर्क का होता सुन्दर शरीर
नाना प्रकार प्रकाश हो सब गुणवान गम्भीर

शस्त्र और अलंकार धारि होगा

वह काम क्रोध मद मोह लोभ नहीं इनका अधिकारी होगा

फिर कर्क चन्द्रभाल लग्न पड़ा वह धैर्यवान भारी होगा

कुबेर धनादक्ष से ज्यादा वह धन वाला भारी होगा।[7]

राम का वनवास जन्म–कुण्डली में से ग्रहों को देखकर बताते हैं :

कन्या का राहू पड़ा इसे तीजे अस्थान

हो ऐसा बल तेरे पुत्र मा सिंह हस्ती भयवान

प्रतापी यश जग को दिखलावेगा

चौथे फिर शनी तुला का है तज मुलक पिता का जावेगा।

मां बाप भ्रात को दुःख होगा अपने सिर कष्ट उठावेगा

कई वर्ष भुगत इस विपता को हट मुलक पिता के आवेगा।[8]

मुकताल :

फिर राज कमावे–धर्म की पत बिठलावे

रामचन्द्र तेरा पुत्र कई बार कष्ट उठावे।[9]

सीता–हरण और युद्ध की भविष्य वाणी देखिये :

सुन फल मंगल मकर का होदुर्जन से जंग

उनका विध्नविनाश हो जय होगी प्रभु संग

एक फिर परम कष्ट हो नारी का

नारी को ढूँढ़न के कारण होगा सिर काम लाचारी का

फलादेश और सुन हे राजन् घर नवें शुक्र बलकारी का

तेरा रामचन्द्र हो ब्रह्म ज्ञानी धारेगा वेष ब्रह्मचारी का

मुकताल :

क्या हुई ऋषि वरनी–सिर्फ केतु की करनी।

रामचन्द्र ने तेरे कठिन विपदा सिर धरनी।[10]

अहमदबख्श वेदांत के ज्ञाता भी थे। उनका वेदांत ज्ञान देखिये। पंचवटी में साधु का वेष

धारण किये हुए रावण के भिक्षा मांगने पर सीता उसका नाम और पता पूछती है तो रावण उत्तर देता है :

सुन्दरी हम वासी उस देश के जहां पारब्रह्म का खेल
दीवा बलता अगम का बिन बाती बिन तेल
बसते हैं परम उजयाले मां
चित चेतन जीव मुड़ा बैठा तथा अगम निगम के ताले मां
न तात मात न सुत दारा ममता तज फिरें निराले मां
तत् अक्षर ओंम सोअहम मंत्र जप सोते नींद सुखाले मा।[11]

"भाषा की दृष्टि से कहा जा सकता है कि अहमदबख्श को हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी और अरबी फारसी के शब्दों का अच्छा ज्ञान था। कई स्थलों पर संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग है। हरियाणवी के प्रयोग भरे पड़े हैं—जोण, घारे घौड़, आ जांगे, ऊत।"[12]

कवि अहमदबख्श बहु आयामी व्यक्तित्त्व के स्वामी थे। उनकी समस्त रचनाएँ विशेषकर रामायण का अध्ययन करने के उपरांत कहीं भी यह आभस नहीं होता कि इसके लिखने वाला मुसलमान है या कम शिक्षित व्यक्ति है। एक बात स्पष्ट है कि उसने विद्वानों और गुणीजनों का भरपूर सत्संग किया था। मेरी व्यक्तिगत राय के अनुसार कवि अहमदबख्श हरियाणा के रसखान, नजीर और जायसी थे। जो सदैव स्मरण रहेंगे।

(ख) आर्य संगीत रामायण का सामान्य परिचय

"आर्य संगीत रामायण" यशवंत सिंह वर्मा की सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय रचना है। इस रचना का मूल रूप "आर्य रामायण भजनावली" था जिसमें कतिपय मार्मिक प्रसंगों पर केवल गीत ही लिखे गए थे। मित्र वर्ग की प्रेरणा से पुनः सम्पूर्ण रामायण का कथानक वार्तालाप आदि सहित दृश्य योजना पूर्वक संयुक्त कर इस रचना का परिसमापन किया गया। रामचरित पर अनेक रचनाओं के होते हुए भी यशवंत सिंह वर्मा का इस पुस्तक के प्रणयन का विशेष उद्देश्य—श्री राम जीवन से संबद्ध कपोल—कल्पित मनगढ़ंत घटनाओं का निराकरण था। प्रस्तुत ग्रंथ में राम जन्म से लेकर वनवासोपरांत अयोध्या वापिस आने तक का वृत्तांत गद्य—पद्य मिश्रित शैली में लिखा गया है। यह रचना प्राचीन आर्य सभ्यता का प्रतिबिम्ब होने से हर सम्प्रदाय के मनुष्यों के लिये

शिक्षा का अनुपम कोष है।

कहने के लिए तो रामायण बहुत ही साधारण सा शब्द प्रतीत होता है, परन्तु शुद्ध रूप में इसकी समालोचना करना कठिन ही नहीं असम्भव है। वर्तमान समय की प्रचलित रामायणों में नियम–विरूद्ध ऐसी गड़बड़ी दिखाई देती है जो यह सोचने पर मजबूर करती है कि कई प्रसंग रामायण में ऐसे ठूंस दिये गये हैं जो सृष्टि–नियम के विरूद्ध स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। उदाहरणतया हनुमान जी का समुन्द्र फांदना, पहाड़ को उठाना, सूर्य को मुंह में डाल लेना, सीता जलती चिता से जीवित निकल आना, हनुमान आदि को वानर का रूप देना, रावण के ग्यारह भिन्न–भिन्न सिर आदि। इन सब विवादों के विषय में अनेक विद्वान अपनी सम्मती दे चुके हैं व देते रहते हैं ।

रामायण में सीता जी के विषय में आता है कि उनका जन्म पृथ्वी से हुआ। राजा जनक के राज्य में अकाल पड़ा, ज्योतिष्यों ने राजा से कहा कि आप हल चलायें। हल चलाते समय सीता जी पृथ्वी से उत्पन्न हुई। यह ऐसा तथ्य है जो विचित्र है । परन्तु यशवंत सिंह वर्मा कृत रामायण के अनुसार उनका कथन है कि,''क्या वायु के बिना पृथ्वी में कोई भी जीवित रह सकता है ?क्या कभी कोई भी इन्सान पृथ्वी से आज तक पैदा हुआ है ? सीता जी की माता का नाम धरणी था। सीता का अर्थ संस्कृत में हल से डाली लकीर भी है। लोगों ने इन दोनों का अर्थ निकाल लिया कि सीता धरणी से हल द्वारा पैद हुई कन्या थीं इसके विपरीत स्वयं राजा जनक ने बाल्मीकि रामायण बाल काण्ड सूत्र 6 श्लोक 22 में कहा है कि यह मेरी कुल सुता है, जो मेरा यश बढ़ायेगी।''[13]

सीता जी के स्वयंबर के समय राजा जनक कहते हैं कि यह मेरी सुता बल से जीती जायेगी। यह मेरी प्रतिज्ञा है, बाल्मीकि रामायण बाल काण्ड सूत्र 68 श्लोक 97। जिस समय अनुसुइया ने सीता जी को बनवास के समय उपदेश देते हुए कहा था,''मेरी जननी ने विवाह के समय जो उपदेश दिया था, वह मैंने धारण किया हुआ है।'' जननी का अर्थ माता ही होता है न कि धाया अथवा पालने वाली।

कई रामलीला मण्डली मंच पर रावण से कहलाती हैं कि ऐ पगली सीता मेरे ग्यारह सिर है। जिन्हें शिवजी का वरदान है जो भी कटेगा वापिस लग जायेगा। यह बात कितनी व्यर्थ लगती है।

यशवंत सिंह वर्मा कृत''आर्य संगीत रामायण'' में ऐसी कपोल कल्पनात्मक बातों को निकाल

कर बाहर फेंक दिया है। इसीलिए प्रस्तुत रामायण का नाम आर्य संगीत रामायण है। इसकी भाषा–शैली आसान व मनोरंजक है। इसके अनेकानेक संस्करण इस बात के द्योतक हैं कि यशवन्त सिंह वर्मा की रामायण को पाठकों ने हृदय से स्वीकार किया है तथा अनन्तकाल तक"आर्य संगीत रामायण" पाठकों के मध्य लोकप्रिय रहेगी।

(ii) रामायण हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर

विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृति को उद्‌भाषित और वहन करने का गौरव भारत को ही उपलब्ध है और भारत में वह स्थान हरियाणा है जहां मानव सभ्यता और संस्कृति का जन्म हुआ। इस तथ्य से सभी विद्वान सहमत है कि मानव–ज्ञान–ज्योति के स्रोत वेदों की रचना हरियाणा की प्रसिद्ध अनादि नदी सरस्वती के कूल पर हुई है जिसका उल्लेख अनेक पौराणिक एवं धार्मिक ग्रंन्थों में मिल जाता है। ब्रह्मा की कर्म भूमि भी हरियाणा ही रहा है। इसीलिए हरियाणा के प्राचीन कई नामों में से एक नाम ब्रह्मावर्त ब्रह्मदेश भी है। हरियाणा के लिए यह गौरव की बात है कि इसी की सरस्वती नदी के तटों पर वैदिक साहित्य की ज्योति आलोकित हुई । और हरियाणा की इसी पावन धरती पर यशवंत सिंह वर्मा द्वारा "आर्य संगीत रामायण" की रचना हुई। किन्तु यह खेद का विषय है कि यशवंत सिंह वर्मा जैसे साहित्यकारों की उपेक्षा हरियाणा के आलोचकों व विद्वानों ने की है। "आर्य संगीत रामायण" को यदि हम हरियाणा की संस्कृति और धरोहर रूप में मान ले तो यह मिथ्या नहीं होगा। क्योंकि इस रामायण में रामायण के प्रमुख पात्रों द्वारा हरियाणा की संस्कृति व सभ्यता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, किन्तु कवि की अपनी अनुभूतियों का प्रतीक होने से भी उसे नकारा नहीं जा सकता। कवि सदैव अपनी तत्कालीन सामाजिक संस्कृति एवं सभ्यता को उजागर करता है। यशवंत सिंह वर्मा ने भी अपनी समस्त कृतियों में हरियाणा की संस्कृति व सभ्यता को उजागर किया है। सर्वप्रथम हरियाणावासियों की भांति तत्तत् महापुरूषों के प्रति उनकी विशेष आस्था दर्शनीय है। वे अपने चरितनायकों के व्यक्तित्त्व में जैसे अपने को इतना घुला मिला देते हैं कि उनसे उनको पृथक् करके नहीं देखा जा सकता। वर्मा जी ने श्री राम व अन्य सभी चरित नायकों को अवतार भाव से न देखकर दिव्य गुणसम्पन्न महापुरूष स्वीकारा है। यज्ञादि कर्मकाण्ड, स्वधर्मे निधनं श्रेय परधर्मी भयावह : आदि गीता में आये कथन तथा दानादि

की पवित्र उदात्त भावनाएं कथाानकों के प्रसंग से आपकी रामायण में यथास्थल प्रतिबिम्बित हो रही हैं। आस्तिकता वर्मा जी की विचारक्षरणि का मेरूदण्ड स्पष्ट प्रतीत होती है। अन्य रचनाओं की भांति "आर्य संगीत रामायण" का आरम्भ–अन्त ईश स्तुति[14] से किया गया है । हरियाणवी जन–मानस भी अपने दैनिक जीवन का आरम्भ ईश स्तुति से व संध्या के समय भी ईश स्तुति से दैनिक जीवन को समाप्त करते हैं। मध्य में भी यथा प्रभू महिमा का दिग्दर्शन कराया गया है। कर्मफल व्यवस्था पर कवि का अटल विश्वास है।[15] जीवन में घटित होने वाली घटनाएं सुख दुखों की आकस्मिक उपलब्धि होनी को बलवती सिद्ध करती हैं। क्या कैकेयी के दुराग्रह से श्रीराम का वनगमन तथा फलस्वरूप अन्य घटनाएँ, सचमुच विधि का विधान अटल है। जो किसी से टाले नहीं टल सकता। भगवान राम को राजतिलक की जगह चौदह वर्ष का वनवास यह विधि का ही विधान है । जो कि हरियाणा संस्कृति का एक अंग है। फिर भी वर्मा जी जीवन में पुरूषार्थ के हामी हैं। श्रीराम कर्त्तव्य पालन के निर्मित्त सहर्ष वन की व्यवथाएं सह रहे हैं। हरियाणवी संस्कृति के अनुरूप यशवंत सिंह वर्मा ने धर्म रक्षा हेतु प्राण देना ही सोद्देश्य मरण स्वीकार किया है। इस प्रकार से रामायण में तत्कालीन हरियाणवी सांस्कृतिक परम्पराओं, मर्यादाओं का निर्वाह अच्छी प्रकार से रामायण में हुआ है। स्वयंबर प्रथा, बनों में निवास, ऋषि मुनियों के यज्ञों की रक्षा का राजकीय उत्तरदायित्व, वर्णाश्रम व्यवस्था आदि में हरियाणा की संस्कृति का आभास स्पष्ट होता है।

उपर्युक्त कथनानुसार कहा जा सकता है कि श्री यशवंत सिंह वर्मा (टोहानवी) कृत "आर्य संगीत रामायण" हरियाणा की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है।

(iii) रामायण का रचनाकाल :

यशवंत सिंह वर्मा (टोहानवी) का जन्म सन् 1881 ई0 में हरियाणा के टोहाना उपनगर में हुआ। 20वीं शती के आरम्भ में इनकी आयु लगभग 20–25 वर्ष के आस–पास रही होगी उस समय इन्होंने रामलीला के अभद्र एवं घिनौने प्रदर्शन देखे होंगे।

उसी के उपरांत उनकी इच्छा जागृत हुई होगी कि इस प्रकार की रामायण से हटकर कोई रामायण लिखी जाय। उनकी सबसे पहली रचना "आर्य संगीत रामायण" ही है जो वैदिक धर्म व आर्य समाज पर आधारित है। यदि उन्होंने 25 वर्ष की आयु से भी लिखना आरम्भ किया होगा

और "आर्य संगीत रामायण" को कम से कम दो वर्ष में लिखकर सम्पूर्ण किया होगा तो 1908 के लगभग "आर्य संगीत रामायण" का रचनाकाल माना जा सकता है। परन्तु यशवंत सिंह वर्मा ने इसका किसी स्थान पर उल्लेख नहीं किया है।

(iv) यशवंत सिंह का परिचय :

श्री यशवंत सिंह वर्मा का जन्म टोहाना (जिला–हिसार) इस समय जिला फतेहाबाद (हरियाणा) (तत्कालीन पंजाब) नामक नगर में साधारण मैढ़ क्षत्रिय जमींदार परिवार में सन् 1881 ई0 में हुआ था। इनकी शिक्षा सामान्य एवं सीमित रही । कोई विशेष उपाधि इन्होंने प्राप्त नहीं की तथापि नैंसर्गिक कवि प्रतिभा तथा उद्देश्य की विशेष लग्न के कारण ये उर्दू, हिन्दी एवं पंजाबी में जनप्रिय साहित्य की सर्जना करने में कृतकृत्य हो सके। "आपके अग्रज श्री जयसिंह वर्मा की संगीत में रूचि थी–विशेषतः सितार वादन के वे शौकीन थे। इन्हीं के सम्पर्क–जन्य–प्रभाव से आप को भी संगीत के प्रति आकर्षण हुआ। आगे चलकर दोनों वर्मा भाईयों ने टोहाना निवासी देवी दयाल गुप्ता के सहयोग से इस उपनगर में आर्य समाज की स्थापना की। हमारे आलोच्य कवि की भी समय–समय पर आर्य समाज के उत्सवों में अपने गीत प्रस्तुत करने को सुअवसर प्राप्त हुआ। इससे आपको गीत–रचना की प्रेरणा मिली तथा आप कवि गायक एवं उपदेष्टा के रूप में उभरने लगे।"[16]

रचनाएं :

यशवंत सिंह वर्मा की प्रारम्भिक रचनाएं 'आर्य भजन दीपिका' तथा 'आर्य भजन सागर' है, जिनमें ईश्वर, भक्ति, देश प्रेम, समाज–सुधार, कुरीति–निवारण तथा आत्मकल्याणदि की प्रेरणा देने वाले गीत एवं भजन संकलित है किन्तु आगे चलकर इन्होंने नाटक सुलभ अभिन्यादि गुणों से अलंकृत, संगीत–सुधा–सिंचित साहित्यिक रचनाएं की जिनकी संख्या सात हैं–

1. आर्य संगीत रामायण
2. आर्य संगीत महाभारत
3. संगीत हरिश्चन्द्र
4. संगीत हकीकतराय
5. संगीत पृथ्वीराज

6. संगीत बाल शहीद

7. संगीत ऋषि दयानन्द

लोकप्रियता : इनमें से निम्नांकित रचनाएं अपनी सच्चरित्र निर्माण प्रेरणा, सरसता तथा सरलता आदि गुणों के कारण डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इनस्ट्रक्शन, पंजाब द्वारा उच्च एवं उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत की गई–

1. आर्य संगीत रामायण
2. आर्य संगीत महाभारत
3. संगीत पृथ्वीराज
4. संगीत हकीकत राय
5. संगीत बाल शहीद''[17]

इसके अतिरिक्त इन रचनाओं के प्रचार प्रसार का मूल्यांकन हम इनके हजारों लाखों की संख्या में प्रकाशनों के आधार पर भी कर सकते हैं। विभिन्न पुस्तकों के वर्तमान संस्करण इन के विगत प्रकाशनों के परिचायक हैं–

1.	आर्य संगीत रामायण	46वीं बार	4000 प्रतियाँ	प्रकाशित
2.	आर्य संगीत महाभारत	20वीं बार	2000 प्रतियाँ	प्रकाशित
3.	संगीत हकीकतराय	29वीं बार	2000 प्रतियाँ	प्रकाशित
4.	संगीत हरिश्चन्द्र	19वीं बार	3000 प्रतियाँ	प्रकाशित
5.	संगीत पृथ्वीराज	8वीं बार	1000 प्रतियाँ	प्रकाशित
6.	संगीत बाल शहीद	छठी बार	1000 प्रतियाँ	प्रकाशित
7.	संगीत ऋषि दयानन्द	5वीं बार	2000 प्रतियाँ	प्रकाशित[18]

निःसंदेह यशवंत सिंह वर्मा की रचना–सप्तक पर ये आंकड़े उसके जन–सामान्य के हृदय में स्थान निर्धारण के जीते जागते प्रमाण है।

मृत्यु–''लगभग 76 वर्ष की आयु में सन् 1957 में आप का देहावसान हो गया।''[19]

यशवंत सिंह वर्मा की समस्त रचनाएं सत्साहित्य की कोटि में आती हैं। उनमें सस्ते मनोरंजन, तथाकथित अश्लीलता आदि के स्पर्श की भी गंध नहीं है। अतः ये रचनाएं पठन–पाठन एवं

अभिनय की दृष्टि से सभी प्रकार के पाठकों श्रोताओं और दर्शकों के लिए समीचीन हैं। धार्मिक उत्सवों कथाओं व पर्वों के अवसरों पर इनका श्रवण–श्रावण एवं प्रदर्शन एक बड़े अभाव की पूर्ति कर सकता है। "कान्तासम्मिततयोपदेशयुज"[20] काव्य के इस प्रयोजन के अनुसार इनमें मनोरंजन के साथ उपदेशात्मकता का साहित्यिक तत्त्व भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार सभी दृष्टियों से रचनाओं का भावपक्ष सबल पुष्ट तथा सशक्त है। यही कारण है कि यशवंत सिंह वर्मा की रचनाएं प्राणवान् हैं क्योंकि भावपक्ष ही काव्य की आत्मा है।

डॉ. सुशीला आर्य के अनुसार यशवंत सिंह वर्मा की "शिक्षा सामान्य थी। वे हिन्दी भाषा के उच्चकोटि के विद्वान न थे। वास्तव में ये रचनाएं प्रथम उर्दू में लिखी गई। पुनः इनका हिन्दी रूपान्तर तैयार हुआ। वैसे भी इन में से कई एक के उर्दू तथा पंजाबी में संस्करण निकलते रहे हैं। इन सब तथ्यों के दृष्टिगत हमें इनकी शैली, भाषा, छंद, मुहावरे, क्षेत्रीय प्रयोग आदि विषयों पर विचार करना है।"[21]

संदर्भ–सूची

1. श्री बालकृष्ण मुज़्तर (हिन्दी दिवस पर लेख, "अहमदबख्श थानेसरी की रामायण, डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, पृ. 1, 14 सितम्बर, 1988)
2. सम्पादक–बालकृष्ण मुज़्तर, अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण, हिन्दी साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, भूमिका,पृ. 11
3. डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य–परम्परा का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ. 104
4. श्री देवीशंकर प्रभाकर, सप्तसिंधु, हरियाणा साहित्य विशेषांक, अक्तू.–नव. 1968, पृ. 51 (वही, पृ. 104 से उद्धृत)
5. सं. बालकृष्ण मुज़्तर, अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण , भूमिका, पृ. 13.
6. सं. बालकृष्ण मुज़्तर, अहमदबख्श थानेसरी कृत रामायण , भूमिका, पृ. 13–14
7. वही, पृ. 13
8. वही, पृ. 14
9. वही, पृ. 14

10. वही, पृ. 14–15
11. वही, पृ. 14–15
12. लेखक–शोध पत्र–डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, अहमदबख्श थानेसरी की रामायण (हिन्दी दिवस–14–9–1988) हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।
13. सुरेन्द्र प्रताप गर्ग, आर्य संगीत रामायण (यशवंत सिंह टोहानवी, दो शब्द, पृ. 2)
14. यशवंत सिंह वर्मा, आर्य संगीत रामायण,1–निराकार निर्विकार सर्व ईश सर्वाधार इत्यादि।
15. मुझे न कोई शोक न गिला हैं। यह सब मुझको मेरे कर्मों का फल मिला है। प. हरि. (तारा)
16. डॉ. सुशीला आर्य, यशवंत सिंह वर्मा''टोहानवी'' (लेख) वार्षिक लेखक गोष्ठी, भाषा विभाग, हरियाणा, चंडीगढ़, (1975–76) के शोध पत्र, पृ. 179
17. डॉ. सुशीला आर्य, यशवंत सिंह वर्मा ''टोहानवी'' (लेख) वार्षिक लेखक गोष्ठी (1975–76) के शोध–पत्र , भाषा–विभाग, हरियाणा, चण्ड़ीगढ़, पृ. 179–180
18. वही, पृ. 180
19. वही, पृ. 182
20. काव्यप्रकाश–मम्मट
21. डॉ. सुशीला आर्य, लेख, यशवंत सिंह वर्मा टोहानवी, वार्षिक लेखक गोष्ठी, शोध–पत्र पृ. 187